

असम की लोक संस्कृति

श्वेता कुमारी

शोधार्थी, हिन्दी विभाग, शम्भु दयाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजियाबाद

(उत्तर प्रदेश) E-mail: <sg7208769@gmail.com>

सारांश

समय के परिवर्तन के साथ जीवन-पद्धतियों, सामाजिक सम्बन्धों एवं सांस्कृतिक व्यवहारों में आए बदलावों के बावजूद लोकपरम्पराएँ अपनी मूल सांस्कृतिक चेतना को बनाए रखते हुए नए सन्दर्भों में स्वयं को पुनर्संयोजित करती रही हैं। किसी भी क्षेत्र की लोक संस्कृति में एक ओर उसकी परम्पराओं, मान्यताओं एवं सांस्कृतिक विरासत की स्मृति सुरक्षित रहती है, तो दूसरी ओर बदलते समय के साथ सम्वाद एवं अनुकूलन की क्षमता भी विद्यमान रहती है। असम की लोक संस्कृति का अध्ययन वस्तुतः वहाँ के विविध समुदायों के लोकमानस, जीवनदृष्टि, श्रम-संस्कृति, प्रकृति-बोध एवं सामुदायिक अस्मिता को समझने का अध्ययन है। भौगोलिक एवं प्राकृतिक विविधता तथा विभिन्न समुदायों के सह-अस्तित्व ने असम की लोक संस्कृति को बहुआयामी एवं विशिष्ट स्वरूप प्रदान किया है। असम की लोक संस्कृति अपने भीतर लोकजीवन के विविध अनुभवों, विश्वासों, पर्व-त्योहारों, रीति-रिवाजों, वेशभूषा, खान-पान तथा सामाजिक-सांस्कृतिक परम्पराओं को समेटे हुए है। यहाँ की सांस्कृतिक विविधता विभिन्न समुदायों के सह-अस्तित्व के साथ-साथ उनके मध्य विकसित पारस्परिक सम्बन्धों, सामूहिक अनुभवों एवं सांस्कृतिक आदान-प्रदान की भी अभिव्यक्ति है। कृषि-प्रधान जीवन एवं प्रकृति के साथ निकट सम्बन्ध असम की लोक संस्कृति की प्रमुख विशेषताएँ हैं। विशेषतः बिहू जैसे लोकपर्व कृषि-चक्र, ऋतु-बोध, श्रम, सामुदायिक सहभागिता एवं उत्सवधर्मिता के बीच स्थापित सम्बन्धों को अभिव्यक्त करते हैं। विभिन्न समुदायों एवं जनजातियों द्वारा अपने-अपने सांस्कृतिक सन्दर्भों में मनाए जाने वाले लोकपर्व असम की सांस्कृतिक बहुलता एवं सामूहिक चेतना को रेखांकित करते हैं। पारम्परिक खान-पान में स्थानीय प्राकृतिक संसाधनों एवं कृषि-व्यवस्था की छाप, जबकि वेशभूषा में क्षेत्रीय सौंदर्यबोध, हस्तकौशल एवं महिलाओं की कलात्मक अभिव्यक्ति दिखाई देती है। लोकजीवन के ये पक्ष एक-दूसरे से पृथक् न होकर परस्पर सम्बद्ध हैं तथा सामूहिक रूप से असम की सांस्कृतिक पहचान का निर्माण करते हैं। इस प्रकार, असम की लोक संस्कृति में प्रकृति एवं मनुष्य, श्रम एवं उत्सव, परम्परा एवं परिवर्तन तथा व्यक्ति एवं समुदाय के बीच गहरे अन्तर्सम्बन्ध दिखाई देते हैं। प्रस्तुत शोध-पत्र में असम की लोक संस्कृति के प्रमुख पक्षों का वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन करते हुए यह समझने का प्रयास किया गया है कि विविध समुदायों की सांस्कृतिक परम्पराएँ किस प्रकार सामूहिक जीवन, प्रकृति-बोध एवं क्षेत्रीय अस्मिता को निरन्तर अभिव्यक्त करती हैं।

प्रमुख शब्द

[लोक संस्कृति, कृषि, परम्परा, बिहू, वेशभूषा, खान-पान, विविधता, प्रकृति।]

Centre For Studies of National Development, Meerut

Editorial Office : D-59, Shastri Nagar, Meerut - 250 004 (INDIA)

Ph. : 0121-2763765, +91-9997771669, +91-9412200765

8

असम की लोक संस्कृति

1. प्रस्तावना

हिमालय की हिमाच्छादित शृंखलाओं से लेकर हिन्द महासागर की अथाह जलराशि तक, पश्चिम के विस्तृत मरुस्थलों से लेकर पूर्वोत्तर की सघन पर्वतमालाओं तक फैला भारत विविधताओं में निहित एकता का अनुपम राष्ट्र है। यहाँ की विविधरंगी भाषा, संस्कृति, जातीय समुदाय, लोकविश्वास, रीति-रिवाज तथा लोक-परम्परा की धाराएँ मिलकर भारतीय संस्कृति के विराट स्वरूप का निर्माण करती हैं। इसी बहुआयामी सांस्कृतिक परिदृश्य में पूर्वोत्तर भारत का प्रवेश द्वार 'असम' का स्थान अत्यन्त विशिष्ट है। ब्रह्मपुत्र की अविरल एवं विराट जलधारा, सदाबहार हरित वनसम्पदा, दूर-दूर तक फैले चाय-बागानों की मनोहरी छटा, जैव-विविधता से समृद्ध प्राकृतिक परिवेश तथा विविध जनजातीय एवं लोक-समुदायों की सांस्कृतिक बहुलता असम को भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के अनुपम वैभव का प्रतीक बनाती है। यहाँ प्रकृति एवं संस्कृति का अद्वितीय सामंजस्य है, जिसमें लोकजीवन की प्रत्येक अभिव्यक्ति अपनी ऐतिहासिक स्मृति, सांस्कृतिक निरन्तरता एवं जीवन-मूल्यों के साथ आज भी स्पन्दित एवं जीवन्त बनी हुई है।

लोक संस्कृति किसी समाज के बाह्य जीवन की अभिव्यक्तियों का मात्र समुच्चय नहीं, अपितु उसकी सामूहिक चेतना, सांस्कृतिक स्मृति, ऐतिहासिक अनुभव, लोकानुभूति तथा जीवन-दर्शन का समग्र एवं सजीव सांस्कृतिक प्रतिमान है। यह लोकसमुदाय के दीर्घकालिक अनुभव, श्रम-संस्कृति, आस्था-परम्परा, नैतिक मूल्य, सामाजिक व्यवहार तथा प्रकृति के साथ स्थापित उसके आत्मीय सम्बन्धों का ऐसा सांस्कृतिक संचयन है, जिसमें अतीत की विरासत, वर्तमान की जीवन-सक्रियता एवं भविष्य की सांस्कृतिक सम्भावनाएँ एक साथ स्पन्दित होती हैं। वस्तुतः लोक संस्कृति किसी भी समाज की सांस्कृतिक अस्मिता, ऐतिहासिक निरन्तरता तथा सामूहिक पहचान की आधारशिला होती है। इसका निर्माण किसी एक व्यक्ति, वर्ग अथवा कालविशेष की देन नहीं, बल्कि अनगिनत पीढ़ियों के सामूहिक जीवनानुभव, संघर्ष, सृजनशीलता एवं लोकबुद्धि के दीर्घ सांस्कृतिक संचयन का परिणाम है। यही कारण है कि लोक संस्कृति निरन्तर परिवर्तनशील होते हुए भी अपने मूल जीवन-मूल्यों, सांस्कृतिक संवेदना एवं सामुदायिक चेतना को सुरक्षित रखती है। इसका संरक्षण किसी औपचारिक संस्थान या लिखित विधान के माध्यम से नहीं, बल्कि लोककथाओं, लोकगीतों, लोकगाथाओं, मिथकों, लोकनृत्यों, लोकाचारों, पर्व-उत्सवों, धार्मिक विश्वासों, पारिवारिक संस्कारों तथा सामुदायिक जीवन-व्यवहार की मौखिक एवं व्यवहारगत परम्पराओं द्वारा स्वाभाविक रूप से होता है। इस प्रकार, लोक संस्कृति केवल अतीत की स्मृतियों का संग्रह नहीं, बल्कि समाज की जीवन्त सांस्कृतिक चेतना का वह सतत प्रवाह है, जो प्रत्येक युग में स्वयं को पुनर्सृजित करते हुए मानवीय मूल्य, सांस्कृतिक निरन्तरता एवं सामाजिक सामंजस्य को नवीन अर्थ प्रदान करता है। विद्या चौहान के अनुसार—“लोक संस्कृति का सम्बन्ध हमारे हृदय, मस्तिष्क, मन के संस्कारों से रहता है तथा इसका सम्बन्ध जन-समुदाय से है। जन-जन के मन एवं आचरण में सन्निहित तत्त्वों से संस्कृति का सृजन अपनी पद्धतियों का निर्माण करता है। सम्पूर्ण लोक की सौन्दर्यानुभूति उसमें सौरस्य का संचार करती है।”¹ अतः लोक संस्कृति जनसामान्य के जीवन, परम्परा, रीति-रिवाज, लोकविश्वास, आचार-व्यवहार तथा सामूहिक चेतना की सहज एवं जीवन्त अभिव्यक्ति है जो समाज की सांस्कृतिक पहचान एवं विरासत को अक्षुण्ण बनाए रखती है।

2. अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य असम की लोक संस्कृति के प्रमुख सामाजिक-सांस्कृतिक पक्षों का अध्ययन करते हुए वहाँ की लोकपरम्पराओं, पर्व-त्योहारों, विशेषतः बिहू, कृषि-आधारित जीवन, खान-पान, वेशभूषा, प्रकृति-बोध तथा सामुदायिक जीवन का विश्लेषण करना है। साथ ही, अध्ययन का उद्देश्य असम के विभिन्न समुदायों की सांस्कृतिक विविधता, पारस्परिक सम्बन्धों एवं सामूहिक चेतना के सन्दर्भ में लोक संस्कृति की भूमिका को स्पष्ट करना तथा परम्परा एवं बदलते सामाजिक सन्दर्भों के बीच उसके निरन्तर पुनर्संयोजन को समझना है।

3. शोध-पद्धति

प्रस्तुत शोध-पत्र में विषय की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध-पद्धति का प्रयोग किया गया है। अध्ययन मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है, जिनमें डॉ० कुलदीप कौर के लोक संस्कृति सम्बन्धी अध्ययन तथा रीतामणि वैश्य (सं०) की असम की जनजातियाँ, लोकपक्ष एवं कहानियाँ प्रमुख हैं। इन स्रोतों के आधार पर असम की लोक संस्कृति के विभिन्न पक्षों—कृषि एवं लोकपर्व, विशेषतः बिहू, खान-पान, वेशभूषा, प्रकृति के साथ सम्बन्ध तथा सामुदायिक जीवन—का संकलन, वर्गीकरण एवं विश्लेषण किया गया है। अध्ययन में असम के भौगोलिक परिवेश एवं विविध समुदायों के सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन के सन्दर्भ में इन लोक-सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों की अन्तर्संबद्धता को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है।

4. असम की लोक संस्कृति

असम की लोक संस्कृति का सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं विशिष्ट गुण उसका समन्वयवादी चरित्र है, जो भारतीय सांस्कृतिक बहुलता एवं सहअस्तित्व की अवधारणा का सजीव एवं प्रामाणिक प्रतिरूप प्रस्तुत करता है। यह संस्कृति किसी एक जातीय, भाषिक अथवा धार्मिक समुदाय की सीमित सांस्कृतिक अभिव्यक्ति न होकर विविध मानव-समुदायों के दीर्घकालिक ऐतिहासिक सम्पर्क, सांस्कृतिक अन्तर्क्रिया, सामाजिक सहभागिता तथा पारस्परिक आत्मसात् की प्रक्रिया से निर्मित बहुआयामी सांस्कृतिक संरचना है। असम की सांस्कृतिक चेतना में आर्य, अनार्य, तिब्बती-बर्मी, ताई-अहोम तथा ऑस्ट्रिक के साथ ही कछारी, बोरो, आहोम, मीरी, खामती, तिवा, राभा आदि विभिन्न जनजाति समुदायों के सांस्कृतिक परम्पराओं का ऐसा स्वाभाविक समन्वय है, जिसने यहाँ के लोकजीवन को वैचारिक उदारता, सांस्कृतिक बहुलता तथा सामाजिक समरसता से समृद्ध किया है। डॉ० जशोधरा बोरा एवं अनन्या दास इस सन्दर्भ में लिखती हैं—“भारत के उत्तर-पूर्वांचल में स्थित असम प्रदेश अनेक जाति-जनजाति, भाषा-भाषी का आवास-भूमि है। यहाँ के सौ-सौ साल पुराने संस्कृति से असमीया जाति एवं संस्कृति का जन्म हुआ है। इसलिए असमीया जाति के जीवन प्रवाह में विभिन्न प्रकार के जनगोष्ठीय सांस्कृतिक उपादान देखा जा सकता है।”² इस प्रकार, असम की लोक संस्कृति विविध जातीय समुदायों की लोक-स्मृति, मिथकीय विश्वास, धार्मिक आस्था, लोकाचार, लोककला, लोकगीत, उत्सव-परम्परा तथा जीवन-दृष्टियों के सतत् अन्तर्संवाद का परिणाम है। यही कारण है कि यहाँ की सांस्कृतिक परम्पराएँ किसी एक स्रोत से संचालित न होकर अनेक सांस्कृतिक धाराओं के पारस्परिक सामंजस्य से विकसित हुई हैं। इस सांस्कृतिक सामंजस्य ने असम को केवल भौगोलिक अथवा प्रशासनिक इकाई के रूप में सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे एक ऐसी जीवन्त सांस्कृतिक सभ्यता के रूप में प्रतिष्ठित किया है, जहाँ विविधता विभाजन का नहीं, अपितु सांस्कृतिक समृद्धि एवं सामाजिक एकता का आधार बनती है। यहाँ की लोक संस्कृति भारतीय संस्कृति कि उस व्यापक अवधारणा को सुदृढ़ करती है, जिसमें ‘अनेकता में एकता’ केवल एक आदर्श वाक्य नहीं, बल्कि लोकजीवन कि स्वाभाविक जीवन-पद्धति के रूप में अभिव्यक्त होती है। यहाँ सांस्कृतिक समन्वय किसी आकस्मिक ऐतिहासिक घटना का परिणाम नहीं, बल्कि शताब्दियों से निरन्तर चलने वाली सामाजिक-सांस्कृतिक अन्तर्क्रियाओं, लोकानुभूतियों तथा सामूहिक सांस्कृतिक चेतना के विकास

का प्रतिफल है। इसी कारण असम की लोक संस्कृति भारतीय सांस्कृतिक विरासत के उन श्रेष्ठ उदाहरणों में सम्मिलित है, जहाँ विविध सांस्कृतिक तत्त्व अपनी मौलिकता को अक्षुण्ण रखते हुए एक व्यापक सांस्कृतिक अस्मिता का निर्माण करते हैं।

असम के लोकजीवन की सांस्कृतिक संरचना का मूलाधार कृषि है। यहाँ कृषि केवल आजीविका का साधन नहीं, बल्कि सामाजिक संगठन, सांस्कृतिक अभिव्यक्ति तथा लोकमानस की जीवन-दृष्टि का केन्द्रीय आधार है। असमिया समाज की अधिकांश लोकपरम्पराएँ, पर्व-उत्सव, लोकगीत, लोकनृत्य तथा सामुदायिक अनुष्ठान कृषि-चक्र के साथ घनिष्ठ रूप से सम्बद्ध हैं। बीजारोपण से लेकर फसल की कटाई एवं नवअन्न के स्वागत तक प्रत्येक चरण लोकजीवन में उत्सवधर्मिता, सामूहिकता एवं प्रकृति के प्रति कृतज्ञता के भाव से परिपूर्ण दिखाई देता है। इस दृष्टि से असम की लोक संस्कृति में कृषि केवल आर्थिक गतिविधि नहीं, बल्कि मनुष्य, प्रकृति एवं समाज के मध्य सन्तुलित सह-अस्तित्व का सांस्कृतिक दर्शन है। उदाहरण के लिए- 'तिवा' जनजाति द्वारा मनाएँ जाने वाला त्योहार 'नखा छाडा' यह त्योहार सूखा पड़ने पर बारिश होने की सम्भावना के लिए वरुण देवता एवं इंद्र देवता को प्रसन्न करने के लिए मनाया जाता है। पूजा बरुआ के अनुसार "यह उत्सव सूखा पड़ने पर मनाया जाता है। इस उत्सव का आयोजन कर वे लोग वरुण देवता से बारिश देने के लिए प्रार्थना गीत गाते हैं। तिवा युवक दूसरों के घर-घर जाकर ऐसे गीत गाते हैं। इस उत्सव में वे एक उडुल लेते हैं तथा उसके अन्दर एक जोड़ा मेंढक रखते हैं। उसके बाद उडुल के ऊपर पानी छिड़का जाता है तथा घर के आँगन को खोदकर उसमें पानी डालकर पूरे आँगन को कीचड़ से भर दिया जाता है। फिर नाचते-गाते वरुण देवता के स्तुति गीत प्रस्तुत कर अन्त में गृहस्थ के द्वारा जो भी दिया जाता है, उसे स्वीकार कर युवक का दल वापस आता है। तिवा लोगों में विश्वास है कि ऐसा करने से इंद्र देवता सन्तुष्ट होते हैं और बारिश होती है।"³ कृषि से सम्बन्धित कई उत्सवधर्मी त्योहार यहाँ विभिन्न जनजातियों द्वारा मनाये जाते हैं, जिसमें हमें प्रकृति एवं मनुष्य का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है। खेत खलिहान की समृद्धि के लिए यहाँ 'गारजा पूजा' की जाती है तो वहीं दूसरी ओर हल जोड़ने के लिए 'हालजुरिनानाय' त्योहार मनाया जाता है। इसी प्रकार हल को धोने के लिए 'नाडौल जाडखा', धान रोपने के लिए 'बाखी गायखननाय', उगते धान को देखने के लिए 'माय नाहिनाय', धान कि कटाई के बाद 'मायनाव लायनाय' एवं कार्बी जनजाति में 'हाचा केकान', साग बीनने के लिए 'मैगड खानाय' आदि कृषि उत्सव हैं। इसी प्रकार बिहू असम की सांस्कृतिक चेतना का सर्वाधिक सशक्त एवं व्यापक प्रतीक है। यह मात्र एक पर्व नहीं, बल्कि असमिया समाज की जीवन-संवेदना, श्रम-संस्कृति, प्रकृति-निष्ठा, प्रेमानुभूति, सामुदायिक सौहार्द तथा लोकजीवन का जीवन्त सांस्कृतिक उत्सव है। रोंगाली बिहू, काती बिहू तथा भोगाली बिहू कृषि-जीवन के विभिन्न चरणों नवजीवन, संरक्षण तथा समृद्धि के प्रतीक हैं तथा कृषक समुदाय की आशा, संघर्ष तथा उपलब्धि को सांस्कृतिक अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं। इन पर्वों के अवसर पर गाए जाने वाले बिहू-गीत, प्रस्तुत किए जाने वाले लोकनृत्य, ढोल, पेपा, एवं ताल जैसे पारम्परिक वाद्ययंत्रों की मधुर ध्वनि, रंग-बिरंगी पारम्परिक वेशभूषा तथा सम्पूर्ण समाज की उत्साहपूर्ण सहभागिता असम की सामुदायिक संस्कृति को सुदृढ़ आधार प्रदान करती है। वस्तुतः बिहू असमिया लोकजीवन में श्रम एवं उत्सव, प्रकृति एवं संस्कृति, परम्परा एवं सामुदायिक चेतना के अद्वितीय समन्वय का प्रतीक है, जो लोक संस्कृति की जीवन्तता, निरन्तरता एवं सांस्कृतिक अस्मिता का प्रभावशाली उद्घोष करता है। उदाहरण के लिए बिहू का एक लोकगीत निम्नलिखित है—

“बैशागु ओइ बैशागु

बैशागु बैशागु

बोथौर जोगामा थाडलायबाय

बाथौर गोदाना फेलायबाय

बैशागु ओइ बैशागु

बाथौर गोदानानि बार मौननानै
 देमौ-देछा बिफाड लाइफाड दाओमा चायोछा
 रडखाडबाय हने
 फेदो दिने फेदी बयबो
 बोराइ-बुरे छेंछा-छिखला
 गथौं-गथाई रडजादिनि।”⁴ (रनेश्वर बसुमतारी, 2016:215)

यह लोकगीत रोंगाली बिहू के आगमन पर प्रकृति एवं मानव जीवन में उमंग, उल्लास तथा नवजीवन के संचार को व्यक्त करता है। पुराने वर्ष की विदाई एवं नए वर्ष के स्वागत के साथ सम्पूर्ण प्रकृति आनन्द से भर उठती है। गीत में सभी आयु-वर्ग के लोगों को भेदभाव भूलकर एक साथ बिहू उत्सव मनाने, नृत्य-संगीत में सम्मिलित होने तथा सामूहिक आनन्द का अनुभव करने का सन्देश दिया गया है। बिहू यहाँ केवल एक पर्व नहीं, बल्कि सामाजिक एकता, प्रकृति-प्रेम एवं सामुदायिक सौहार्द का प्रतीक बनकर उभरता है।

कृषि-प्रधान जीवन एवं बिहू की सांस्कृतिक परम्परा के अतिरिक्त असम के लोकपर्व एवं लोकउत्सव उसकी बहुरंगी लोक संस्कृति को और अधिक व्यापक आयाम प्रदान करते हैं। ये उत्सव ऋतु-परिवर्तन एवं धार्मिक आस्थाओं के साथ-साथ विभिन्न जनजातीय एवं गैर-जनजातीय समुदायों की सांस्कृतिक परम्परा एवं सामुदायिक जीवन-मूल्यों के जीवन्त वाहक हैं। बड़ो जनजाति में ‘बाथो’ भगवान की पूजा कर वसंतकालीन त्योहार मनाया जाता है तथा सिजुआ का पेड़ लगाकर सुरक्षा की निम्नलिखित प्रार्थना की जाती है—

“नै सफल बीराय बयों
 खुलुमहरदोड जोड नोंखो
 दहाय आफ्ला।”⁵

(अर्थात्—हे बाथो हमारी प्रार्थना स्वीकार करो और हमारी रक्षा करो)

इसके अतिरिक्त, नेवोन होनाय (परिवार केन्द्रित पूजा), बागराजानो होनाय (परिवार केन्द्रित पूजा, भंडारे के देवता), फूललिहाबा (प्रकृति एवं पुरुष का विवाह के रूप में मनाए जाने वाला उत्सव) आदि उत्सव इस जनजाति के प्रमुख पर्व हैं। कार्बी जनजाति में भी धर्म से सम्बन्धित त्योहार बहुत सारे हैं जैसे—ईश्वर को धन्यवाद देने के लिए ‘रडकेर’ तो मृतकों की आत्मा की शान्ति के लिए ‘चामाँकन’ आदि। मिचिंग जनजाति में भी उरम, तालोड़ उड, डाइसीया (देव) कर्म, उबुर पूजा, मिबु दागनाम आदि प्रमुख हैं। इन जनजातियों के अतिरिक्त, असम की अन्य अनेक जनजातियों में भी विविध धार्मिक मान्यताएँ, पर्व-उत्सव, विवाह-संस्कार तथा प्रकृति-आधारित लोकाचार प्रचलित हैं। यद्यपि प्रत्येक जनजाति की अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान एवं धार्मिक परम्पराएँ हैं, तथापि प्रकृति-पूजा, पूर्वजों के प्रति श्रद्धा, सामुदायिक सहभागिता तथा जीवन के प्रमुख संस्कारों के प्रति आस्था लगभग सभी जनजातीय समुदायों में समान रूप से विद्यमान है। यही विविधता एवं सांस्कृतिक समन्वय असम की लोक संस्कृति को विशिष्ट एवं समृद्ध बनाता है।

असम की जनजातीय संस्कृति का एक महत्वपूर्ण पक्ष उनकी वेशभूषा एवं रहन-सहन भी है। प्रत्येक जनजाति की वेशभूषा, आभूषण, आवास, खान-पान तथा दैनिक जीवन-शैली उसकी सांस्कृतिक परम्पराओं, प्राकृतिक परिवेश एवं सामाजिक संरचना का परिचायक है। यद्यपि विभिन्न जनजातियों की वेशभूषा एवं जीवन-पद्धति में विविधता दिखाई देती है, तथापि प्रकृति के साथ सामंजस्य, सादगी, श्रमशीलता तथा सामुदायिक जीवन की भावना सभी जनजातियों में समान रूप से विद्यमान है। यही विशेषताएँ असम की लोक संस्कृति को विशिष्ट एवं समृद्ध स्वरूप प्रदान करती हैं।

असम की कार्बी जनजातियों का रहन-सहन एकदम साधारण एवं प्रकृतिनिष्ठ है। इनके घर-जमीन से ऊँचे लकड़ी, बास एवं छप्पर के बने होते हैं, जिनको चाडधर (मचाननुमा घर) कहते हैं। यह लोग अपनी

परम्परागत वस्त्र जो करघे पर बुनकर तैयार करते हैं, उसे ही पहनते हैं जो बहुत सुंदर एवं रंगीन होती है। पुरुष वर्ग चोय मिरि (एक प्रकार का जॉकेट) पहनते हैं तथा कमर पर रिफोडनाम (एक प्रकार का कपड़ा) लपेटते हैं। सर पर पोहो (पगड़ी) एवं गले में एक लाल पेय कामशा (गमछा) धारण करते हैं। पुरुष वर्ग द्वारा विशेष आभूषण भी धारण किया जाता है जिसे प्रिंसोरोई (चाँदी का कंगन) नारिक, लेक-पेकोम, लेक एजि एवं लेक्रूआ (गले में पहनने वाला आभूषण) कहते हैं। महिला वर्ग की बात करें तो कमर पर पिनि (काले रंग का कपड़ा) एवं ऊपरी हिस्से में चादरनुमा पेकोक पहनती है। कमरबन्ध इनका विशेष आभूषण है, जिसे वांकोक कहते हैं। साथ ही कानों में नोयेडपी, गले में चाँदी एवं लाल मोतियों से बना हाड़ एवं हाथों में चूड़ी जिसे रय-इडरी, पेडखारा एवं रय-शेंकी कहते हैं तथा आरणान नाम की अंगूठी पहनती है। कार्बी जनजाति में सोने का आभूषण पहनना मना है, इसलिए ये लोग सभी आभूषण चाँदी के धारण करते हैं। कार्बी जनजाति की विशेष पहचान यहाँ की महिलाओं द्वारा अपने स्त्रीत्व की रक्षा के लिए स्वयं को माथे से लेकर टुडू तक काली रेखा खींचकर बदसूरत बनाना है।

राभा जनजाति एवं गारो जनजाति के वस्त्र अत्यन्त रंगीन, रंग-बिरंगी फूलों से कढ़े हुए होते हैं। यहाँ स्त्रियाँ कढ़ाई-बुनाई आदि कला में निपुण होती हैं। इनके परम्परागत वस्त्र दाकमांदा (कमीज), माराड जायकू (नृत्य के अवसर पर पहनने वाला परम्परागत वस्त्र), गान्दामाखाल (धोती की तरह), कुर्ता, साफा, मेखला, काम्बड़ (स्त्रियों द्वारा छाती में लपेटा जाने वाला वस्त्र), खचने या खदंबा (जूड़ा ढकने के लिए), बुकविल (विवाहित औरत के लिए कमीज़), आंचा (चादर), पाछरा (ठण्ड से बचने के लिए महिलाओं द्वारा पहनी जाने वाली पोशाक), पाजाल (गमछा), दतारि (कमर में पहनने वाला वस्त्र) आदि पहनते हैं। असमिया समाज शिल्प एवं कलाओं का धनी समाज है। यहाँ विविधरंगी वेशभूषा एवं रहन-सहन का विविधवर्णी स्वरूप हमें दिखाई देता है। डॉ. मालविका शर्मा इस सन्दर्भ में लिखती हैं- “असम की विविध जाति-जनजातियों का वयन-शिल्प असमिया संस्कृति का वाहक है। रामा, बड़ों, मिचिंग, कार्बी, देउरी, कछारी आदि जनजातीय लोगों के कंधे से बुने जाने वाले सुंदर कपड़े विश्व-दरबार में अपना अलग ही महत्त्व रखता है।”⁶

असमिया समाज का खान-पान प्राकृतिक परिवेश, कृषि व्यवस्था एवं सामुदायिक जीवन से गहरे रूप से जुड़ा हुआ है। भौगोलिक परिस्थितियों एवं प्रकृतिनिष्ठ जीवन-पद्धति के अनुसार इनके खान-पान में भी विविधता दिखाई देती है, लेकिन विविधता के साथ उसमें स्थानीयता एवं सादगी का रंग चढ़ा हुआ है। उदाहरणतः जौ, भात, कीड़ा, साग-सब्जी, मछली, मांस (बत्तख, सुअर, मुर्गी, आदि) उनका प्रिय आहार है। शादी के अवसर पर मूड़ी, लाल चाय एवं शराब आदि विशेष रूप से खाया जाता है। ताड़ फाके समाज में चावल अधिक प्रिय है, जिससे कई प्रकार के व्यंजन बनाए जाते हैं जैसे- पोटली चावल (कोपात के पत्ते में रखकर भाप में बनाए गए चावल), खालेआम (बास के चोगे में बनाए हुए चावल) तथा चावल के चूर्ण से भी यहाँ तरह-तरह के भोजन बनाए जाते हैं जैसे- खाओ कुन, खाओ पुक, पेड हगै खान, टतेंप आदि असमिया समाज का यह पारम्परिक खान-पान पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होते हुए इन समुदायों की सांस्कृतिक पहचान का अभिन्न हिस्सा बन गया है।

5. निष्कर्ष

निष्कर्षतः हम देख सकते हैं कि विविध समुदायों की मिलनभूमि, असम की लोक संस्कृति, उसके भौगोलिक परिवेश, कृषि प्रधान जीवन, प्रकृति के साथ आत्मीय सम्बन्ध एवं सामुदायिक चेतना से निर्मित एक ऐसी जीवन्त सांस्कृतिक परम्परा है, जिसमें लोकजीवन के विविध रंग एक-दूसरे से अन्तर्गुणित दिखाई देते हैं। यह उत्सवधर्मी समाज कृषि से लेकर खान-पान, वेशभूषा, लोकव्यवहार आदि प्रत्येक पक्ष में अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक संवेदना को अभिव्यक्त करता है, जो बाहरी संरचना नहीं, बल्कि स्वयं जीवन की स्वाभाविक गति है। असम की कृषि परम्परा एवं उससे सम्बन्धित लोकपर्व विशेषतः बिहू जो अलग-अलग जनजातियों में विभिन्न प्रकार से मनाया जाता है, इस बात को रेखांकित करते हैं कि लोक ने श्रम एवं उत्सव, प्रकृति एवं मनुष्य तथा जीवन एवं संस्कृति के मध्य एक गहरा सामंजस्य स्थापित किया है। बिहू असम की कृषि चेतना, ऋतु

बोध, सामूहिकता एवं जीवनदृष्टि का सांस्कृतिक रूपान्तरण है। इसी प्रकार पारम्परिक खान-पान में स्थानीय प्राकृतिक एवं क्षेत्रीय कृषि व्यवस्था की छाप, वेशभूषा में क्षेत्रीय सौंदर्यबोध एवं वहाँ की स्त्रियों की कलाकारी आदि में सामाजिक एवं प्राकृतिक अनुकूलन की प्रक्रिया स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है, जो एक-दूसरे को अर्थ प्रदान करने वाली परस्पर सम्बद्ध कड़ियाँ हैं।

सन्दर्भ-सूची

1. डॉ. कुलदीप कौर, “लोक संस्कृति से अभिप्राय, स्वरूप, विशेषताएँ तथा विभिन्न पक्ष”, *International Journal of Information Movement, ISSN:2456-0553(online)*
2. रीतामणि वैश्य (सं०), *असम की जनजातियाँ: लोकपक्ष एवं कहानियाँ*, नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2023, पृ०सं० 77
3. वहीं, पृ०सं० 210.
4. वहीं, पृ०सं० 28.
5. वहीं, पृ०सं० 24.
6. वहीं, पृ०सं० 139.

